

सिद्धि
मन्त्र
॥

॥ सिद्धि मां मित्रं जय जय वयसि मधुन सं
कल्लो लनाः लल्लो लल्लो माया वयसि लल्लो
याः रुग्णस कुं लल्लो मां न लल्लो न लल्लो
न लल्लो लल्लो लल्लो लल्लो लल्लो लल्लो लल्लो
लल्लो लल्लो लल्लो लल्लो लल्लो लल्लो लल्लो लल्लो

ॐ जय ॐ ॐ

स्वामी श्री लक्ष्मी

पृथक्पृथक्
सम्बन्ध १०० लालिप्रितिकार्तिकवादि
उपेक्षा ४०० लो

गगु ॥ तिगु ॥ न जानिते रे रास के साह्ये ॥ कौरि कौरि मा
या जो रिगाहि रिनदि आवहता ह्ये ॥ मरुत काम न सोना
नहि कि जीउ हो का दिल चलता ह्ये ॥ १ ॥ दिरा हो के
पल पविचार पर कि काम पे साह्ये ॥ अतर वहार्तिर
थर कर ले सोहि सा देव मुठ ह्ये ॥ २ ॥ बुझा हो के ये
दवाचे रे वे माला जपता ह्ये ॥ कह एक वीर सु मो नारि सा
धु ह रिजे सा कोते साह्ये ॥ ३ ॥

五

पञ्चावली

रामचंद्र

हम ॥ यो दलिताल ॥ सा जप रेखर नहि व्यावे कहे या ॥
घर रेवे वा छि यावन रेवे गाहि या ॥ जमुना किना
रि रेवे जस मति मे मा सा ज ॥ १ ॥ जमुना किना
रि मे व सुरि व जे या ॥ मुदरि के धुनी सुनि ताल
व जे या : सा ज ॥ २ ॥ अवर दास को तु मरि दरस को
आगे सर ॥ ३ ॥ का ॥

विमल

॥ हरि के शरन चित आन निला या : सा ज ॥ श्री
हम ॥ विभास ताल जति ॥ जन रि वे हे करुना से व क बने
माल ॥ ४ ॥ मई न कलु व दोल छि सुज व स्रया उंन मु
नया सहाय अपाल : पुद्गलिया च दुमा को ति जुल छि
या लया जो ति सोगे ॥ मिषान ते जाव जन रि ॥ ५ ॥ क

बास

वसि भ

वरि न विसव ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

संज्ञा ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

ज २

सिद्धि

माईसिलसमनुक बिकरुस श्वकु रलं भुसे गलसक वंया
 सिलमाल लो ववसतूरिया मोतिया हल नतिया परिजन
 जो गिनि वेताल ॥ कु ॥ गमो सिंह वदि नि त्रिसुरन भुसे
 सस ह्यो सासुर परिवार स्था ज्जव वयलिला डन गन
 यनिस फु धन हत टट हिल वार वार ॥ कु ॥ चन्द्रल
 लवलि श्री लम्पट वले १५ माल

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्री

मि विष्णु मति जयरदि मि या नाथ हरिया अवताल
 लाह सने पाल पति विष्णु मल नर पति भगवति दि
 द्रुम आधार ॥ कु ॥ ॥ राजा गौरा ॥ जैसा को हरि
 तैसा हो न जाना हर जिके सा हो ॥ कु ॥ नागा हो के ज
 ता अवधा वे नागा पवन सो चलता हो उरि हात

ग
रि

धरेसिरउपर मंका साहेव दरता हें ॥ १ ॥ मदन
होके वागजु देव यों का साहेव वहरा ॥ २ ॥ नि के प
गते परवाजे सोहि साहेव सुनता हें ॥ ३ ॥ वावु हो
के माला जाये अरु कर निरखता हें कपत कंधान
धरे मन भितर यों का साहेव मिलता हें ॥ ४ ॥

हु
रु

जो
वा

वावु हो के माला जाये भक्ति भाव सो चलता हें कह
य कवि बसु नो भाई साधु भव सागर मो तरता हें
न जानहरा जिकै सा हें ॥ ५ ॥ ॥ श्री राम राम हात
संग कोला ॥ वाहु भुलि जिवित सदा नग ॥ बाल बहिन ते
र सजौ भन वेल सतिरिवरति रस पाइ न भुलत पातम

राम

धर्म मष्टुमानसा धरममिषानमषानः॥ १॥ या
ध्वैसभलोयेनभवत्तस ध्वयेनमायामतां इः अने
गलोभमोहदयावलो कदोहमफ्याविवेककृता
नः॥ २॥ दिनसनसरोज्जवाहसदेस्योवाङ्गाका
लध्वयेननुवानभालयेमफूमनसोयावधनजन

की व
की व
की व
की व
की व

लावामयायमबुला जोभरावेरधनं फुकेधयाला ॥ १ ॥ छिदा
मिमबुला दुषवीयत्तवला लोकयावे हासेयाना तस्य त्वनाला
मायाहि केमदुला चितवायधुन्यला तोलतेधका छिनधयाला
॥ ४ ॥ मयचक्रगडा यधमसहीततद्वलन ल्हाकलनल्ला
स्येतलवला न ल्हाकलया तनमरा सुमलवाचानहीनजा
गत्र उधालसा केवलन ॥ नवतु निज्याला कलाकुसलधुज
क

३५ ॥

की व
की व
की व
की व
की व

दला ॥ १ ॥ ॥ ॥ रागागालि ॥ ॥ मोरियि कालडिकावा
लाजोगिमोरियि कालडिकावाला ॥ ॥ जोगि वजा
वेआ फलेकनकनरुरहिवजयेवाला जोगिः मा ॥
१ ॥ जोगिमिद्रा वला वहिमरा छाला उघरलधम
तेवाला जोगि मोर ॥ २ ॥ ॥ रागागाली ॥ ॥ च
रवाला जो के सवी प्रमाना ॥ ॥ मलि क ॥ ॥

स्वस्ति श्रीरामसर्गारामुनारायणालादि राजभारतामर्थ

लसिचिडातनजाउसषिया॥ जमुनाकेनिरतिरधेनव

रुनवैविनावसिवजावेसषियाच॥ १ ॥ विन्दावन

मेकुंजगालीलमेनिकुंजफुजविहारेसषियाच॥ २ ॥

राम॥ गालि॥ ॥ सुमेरायादिभवार्नेदवि॥ सिंदचहुत

देविगरजतआवेलातनधाजावहेरानिदेवीः सु॥ १ ॥

रागोकेसर्गवदरुक्कित्तापिलवित्तानमेवमके

वारा॥ ॥ सुमेरायमभी

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

स्वस्ति श्रीरामसर्गारामुनारायणालादि राजभारतामर्थ

स्वस्ति श्रीरामसर्गारामुनारायणालादि राजभारतामर्थ

स्वस्ति श्रीरामसर्गारामुनारायणालादि राजभारतामर्थ

स्वस्ति श्रीरामसर्गारामुनारायणालादि राजभारतामर्थ

राग॥ भजन॥ ॥ दास नहु ब्रह्मधर्मिक कहि हाय हाय राम बन जात करे ॥
अजु धाराम भगत को दिख को मेरे बाल कहुन बन धरि ॥ विना स्वपरा
धि मेरे बाल कराम को हाय हाय काहे को जोग धरि ॥ १ ॥ डड कमल
रु हात लिये करे अजायब बरन देह धरि ॥ नी कलिराम चतुल भवन
भई को मल सितल संग धरि ॥ २ ॥ जो दिन रास निकली हुव

नको लादेन को सिला मोह भरि ॥ रोइ रोइ कहै माता को सिला रा
म विना मो प्रान जाहि ॥ ३ ॥ रो धन करत को सिलाराती रात दिन
से कमल न पारि ॥ के से जीय मेरे बाल कर धन से कठ मुल कल
आहार करे ॥ ४ ॥ जल विना तल मयत सिन ने जे ही रावि नहु
प्रदेही धर ॥ दास पद श्री राम भजन विन जन्म अकारत जा
न जाहि ॥ ५ ॥ दास

रागणिगुण॥ १॥ निरुक्तजातजनाहरथपरु निरुक्तजातजताईहो
॥ समझनियामेहेंकोहिविररथसैलेकछोराईहो॥ काकरुतीर
यानामेकोकायाकोनहोकात्पाईहो॥ १ ॥ सरजुकोतिरअ
जुध्याभारदसरथसुतरछुलाईहो॥ जाकीतिरियानामेरहिता
हानिसाचलत्पाईहो॥ २ ॥ अमृतवचनबोलेपतुगातुरतरिजा
ईहो॥ उचरोमारिमाहाजुहुकिन्नुरथसैलेकछोराईहो॥ ३ ॥ अ

ग्रीवानछोरेविसासः डुनुपंषजरीईहो॥ ४ ॥ रामरकहतचले
वीदेदि कोनेविदेहिसमुजाईहो॥ तुलसिदासप्रभुयासनचर
नकोकथाकहेसमुजाईहो॥ ५ ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॥ राम
भजन॥ ॥ अवतओमारवितिगयोहेः क्याघहुतागावांवार॥ का
हामोआयाअरजनेव भजनकरतकियषणय॥ हियाजाआ

ईवालायनविते-घावनयेलतभुलेसंसार॥अवत॥ १॥हाम
 हामकाधामधामसमागे-भारिभतिजायारिया॥देविदेवाना
 मानमेकामकोधभयविह्वल॥२॥जुभावईजोइकेपिछेना
 हाकजिवनकियगमा॥गामविमुषदुषपाय-असिजुलमकोवि
 नकोविचार॥३॥ गग॥ ॥पारबुलपुम्पेत्वापुनको
 तममदनन्दनन्दनन्ददनुजघन्दजसोजनन्द श्रीगोविन्द

॥ध्रु॥करुनामेकमलनैराकृपासिद्धसर्वसेनपुनकरताके
 स्त्रीगुप्तानीध्यानगोकुलचंद्र॥पारा॥ १॥दिनानाथदुष
 भजनभक्तसुदुलजगजीवजगन्नाथजगन्नाकातरदुष
 दंडकंठपारा॥२॥रामकहतगंगाधरमनमोहनचेत
 नामतुलसीदास-सजनआयेदेहोगतिपुणचंद्र॥पारबु
 ल॥ ३॥१०॥७॥९॥७॥४॥७॥२॥